

## Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्जे	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्थ	सद्गन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्ज	उज़्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काफी	काफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्ग्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्यार	अख्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	स्त्रिष्टां	स्त्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में  
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा  
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की  
मेहनत, चीन से आया  
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद  
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़  
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के  
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो  
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में  
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा  
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की  
मेहनत, चीन से आया  
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद  
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़  
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के  
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो  
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

## 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

### केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

## फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे



## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही हैं और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही हैं और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

पपद्मपवपवद्भवव

[illegible]

पपअपवपवअवव  
पपअैपवपवअैवव  
पपअँपवपवअँवव  
पपइपवपवइवव  
पपईपवपवईवव  
पपउपवपवउवव  
पपऊपवपवऊवव  
पपएपवपवएवव  
पपऐपवपवऐवव  
पपँपवपवँवव  
पपैपवपवैवव  
पपआपवपवआवव  
पपओपवपवओवव  
पपऔपवपवऔवव  
पपऋपवपवऋवव  
पपॠपवपवॠवव  
पपऌपवपवऌवव  
पपॡपवपवॡवव





pg 9/18

pg 10/18

"तपवपत"	"इपवपइ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपळिपपळिंपपळिंपप
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपडु"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपविपपविंपपविंपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"डुपवपडु"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	पपशिपपशिंपपशिंपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	पपषिपपषिंपपषिंपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	पपसिपपसिंपपसिंपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपडिपपडिंपपडिंपप	पपहिपपहिंपपहिंपप
"फपवपफ"	"ऐपवपऐवव"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"बपवपब"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपज्ञिंपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"ष्टपवपष्ट"		पपजिपपजिंपपजिंपप	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"ष्टपवपष्ट"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपटिंपप	
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"ष्टपवपष्ट"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"ळपवपळ"	"लृपवपलृ"	"ल्लपवपल्ल"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"वपवपव"	"लृपवपलृ"	"ल्लपवपल्ल"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
"शपवपश"		"ल्लपवपल्ल"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
"षपवपष"	"ड्रपवपड्र"	"ल्लपवपल्ल"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"सपवपस"	"छपवपछ"	"ल्लपवपल्ल"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"हपवपह"	"ट्रपवपट्र"	"हुपवपहु"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"क्रपवपक्र"	"ट्रपवपट्र"	"हुपवपहु"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"खपवपख"	"ड्रपवपड्र"	"हुपवपहु"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"गपवपग"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"		पपपिपपपिंपपपिंपप	
"जपवपज"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"		पपफिपपफिंपपफिंपप	
"ङपवपङ"	"रूपवपरू"	"हुपवपहु"	०००.०१०.०११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"ढपवपढ"	"हृपवपहृ"	"हुपवपहु"	००१.०१०.१११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"फ़पवपफ़"	"ळपवपळ"	"हृपवपहृ"	००२.०१०.२११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
"य़पवपय़"		"रूपवपरू"	००३.०१०.३११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"दुपवपदु"	००४.०१०.४११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"दुपवपदु"	००५.०१०.५११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
	"ङ्गपवपङ्ग"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११		
"अपवपअ"	"टृपवपटृ"		००७.०१०.७११		
"ऐपवपऐ"	"टृपवपटृ"		००८.०१०.८११		
"ऑपवपऑ"	"ठुपवपठु"		००९.०१०.९११		

pg 12/18

pg 13/18



पपचक्रपपचखपपचापपच्यपपचहपपच्यप  
 पचछपपचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडप  
 पचढपपचणपपचत्तपपचथपपचदपपचधपपचनप  
 पचन्पपचमपपचफपपचबपपचभपपचमपपचयप  
 पघ्नपपच्रपपच्लपपचळपपचळपपचवप  
 पघापपघषपपघसपपघहपपघक्रपपघ्रपपघ्राप  
 पघजपपघहपपघढपपघफपपघ्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप  
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप  
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप  
पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप  
पइरपपइऱपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप  
पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप  
पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप  
पड्छपपड्जपपड्झपपड्झपपड्ठपपड्ठपड्ठुप  
पड्ठुपपड्णपपड्णपपड्थपपड्दपपड्धपपड्ढनप  
पड्ढनपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्म्यप  
पड्म्यपपड्रपपड्लपपड्लपपड्लपपड्त्वपपड्शप  
पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप  
पड्डपपड्ढपपड्फपपड्म्यपप

पपथक्पपथ्वपपथापपथपपथ्पपपथ्वपपथ्ठप  
 पथजपपथ्झपपथञपपथटपपथठपपथढपपथढप  
 पथणपपथत्तपपथथपपथद्दपपथधपपथनपपथन्तप  
 पथ्मपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यपपथ्रप  
 पथ्त्तपपथ्लपपथळपपथळपपथत्तपपथ्शपपथषप  
 पथ्सपपथ्हपपथक्कपपथ्खपपथापपथ्जपपथ्हप  
 पथ्ढपपथ्फपपथ्यपप

पपत्कपपत्खपपत्तापपत्थपपत्डपपत्थपपत्छप  
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढप  
पत्णापपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्तपपत्तपपत्त  
पपत्फपपत्बपपत्भपपत्मपपत्न्यपपत्त्रपपत्तपपत्तप  
पत्लपपत्लपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्कप  
पत्खपपत्तापपत्जपपत्डपपत्ढपपत्फपपत्न्यपप

पपभकपपभखपपभगपपभघपपभङ्गपपभचपपभछप  
 पभजपपभझपपभञपपभटपपभठपपभडपपभढप  
 पभणपपभत्तपपभथपपभदपपभधपपभनपपभन्नप  
 पभमपपभम्पपभबपपभभपपभमपपभयपपभ्रप  
 पभरपपभल्पपभळपपभळपपभवपपभशपपभषप  
 पभसपपभहपपभकपपभखपपभगपपभजपपभङ्गप  
 पभढपपभफ्पपभभ्यपप



less common half-forms

पपक्षकपपक्षखपपक्षगपपक्षघपपक्षङपपक्षचप  
पक्षछपपक्षजपपक्षझपपक्षञपपक्षटपपक्षठपपक्षडप  
पक्षढपपक्षणपपक्षतपपक्षथपपक्षदपपक्षधपपक्षनप  
पक्षपपपक्षफपपक्षबपपक्षभपपक्षमपपक्षयपपक्षलप  
पक्षळपपक्षपवपपक्षापपक्षषपपक्षसपपक्षहपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गापपङ्घपपङ्ङपपङ्चप  
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्डप  
पङ्ढपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नपपङ्पप  
पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यपपङ्लपपङळप  
पङ्पवपपङ्शपपङ्षपपङ्सपपङ्हपप

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचप  
पदछपपदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडप  
पदढपपदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप  
पदफपपदबपपदभपपदमपपदयपपदलप  
पदळपपदपवपपदशपपदषपपदसपपदहपप

पपश्रकपपश्रखपपश्रापपश्रघपपश्रङपपश्रचप  
पश्रजपपश्रझपपश्रञपपश्रटपपश्रठपपश्रडप  
पश्रढपपश्रणपपश्रतपपश्रथपपश्रदपपश्रधपपश्रनप  
पश्रपपपश्रफपपश्रबपपश्रभपपश्रमपपश्रयपपश्रलप  
पश्रळपपश्रपवपपश्रापपश्रषपपश्रसपपश्रहपप

पपश्रुकपपश्रुखपपश्रुगपपश्रुघपपश्रुङपपश्रुचप  
पश्रुजपपश्रुझपपश्रुञपपश्रुटपपश्रुठपपश्रुडप  
पश्रुढपपश्रुणपपश्रुतपपश्रुथपपश्रुदपपश्रुधपपश्रुनप  
पश्रुपपपश्रुफपपश्रुबपपश्रुभपपश्रुमपपश्रुयपपश्रुलप  
पश्रुळपपश्रुपवपपश्रापपश्रुषपपश्रुसपपश्रुहपप

पपत्रकपपत्रखपपत्रगपपत्रघपपत्रङपपत्रचप  
पत्रछपपत्रजपपत्रझपपत्रञपपत्रटपपत्रठप  
पत्रडपपत्रढपपत्रणपपत्रतपपत्रथपपत्रदप  
पत्रधपपत्रनपपत्रपपत्रफपपत्रबपपत्रभपपत्रमप  
पत्रयपपत्रलपपत्रळपपत्रपवपपत्राप  
पत्रषपपत्रसपपत्रहपप

पपरूकपपरूखपपरूगपपरूघपपरूङपपरूचप  
परूछपपरूजपपरूझपपरूञपपरूटपपरूठप  
परूडपपरूढपपरूणपपरूतपपरूथपपरूदपपरूधप  
परूनपपरूपपपरूफपपरूबपपरूभपपरूमप  
परूयपपरूलपपरूळपपरूपवपपरूाप  
परूषपपरूसपपरूहपप

पपगृकपपगृखपपगृगपपगृघपपगृङपपगृचप  
पगृजपपगृझपपगृञपपगृटपपगृठपपगृडप  
पगृढपपगृणपपगृतपपगृथपपगृदपपगृधपपगृनप  
पगृपपपगृफपपगृबपपगृभपपगृमपपगृयपपगृलप  
पगृळपपगृपवपपगृापपगृषपपगृसपपगृहपप

पपघृकपपघृखपपघृगपपघृघपपघृङपपघृचप  
पघृजपपघृझपपघृञपपघृटपपघृठपपघृडप  
पघृढपपघृणपपघृतपपघृथपपघृदपपघृधपपघृनप  
पघृपपपघृफपपघृबपपघृभपपघृमपपघृयपपघृलप  
पघृळपपघृपवपपघृापपघृषपपघृसपपघृहपप

पपचृकपपचृखपपचृगपपचृघपपचृङपपचृचप  
पचृजपपचृझपपचृञपपचृटपपचृठपपचृडप  
पचृढपपचृणपपचृतपपचृथपपचृदपपचृधपपचृनप  
पचृपपपचृफपपचृबपपचृभपपचृमपपचृयपपचृलप  
पचृळपपचृपवपपचृापपचृषपपचृसपपचृहपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गापपञ्घपपञ्ङपपञ्चप  
पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्टपपञ्ठपपञ्डप  
पञ्ढपपञ्णपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धपपञ्नप  
पञ्पपपञ्फपपञ्बपपञ्भपपञ्मपपञ्यपपञ्लप  
पञ्ळपपञ्पवपपञ्शपपञ्षपपञ्सपपञ्हपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गापपङ्घपपङ्ङपपङ्चप  
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्डप  
पङ्ढपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप  
पङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप  
पङ्लपपङळपपङ्पवपपङ्शपपङ्षपपङ्सप  
पङ्हपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गापपञ्घपपञ्ङपपञ्चप  
पञ्छपपपञ्जपपपञ्झपपपञ्ञपपपञ्टपपपञ्ठप  
पपञ्डपपपञ्ढपपपञ्णपपपञ्तपपपञ्थपपपञ्दप  
पपञ्धपपपञ्नपपपञ्पपपपञ्फपपपञ्बपपपञ्भप  
पपपञ्मपपपञ्यपपपञ्लपपपञ्ळपपपञ्पवप  
पपपञ्शपपपपञ्षपपपपञ्सपपपपञ्हपप

पपण्कपपण्खपपण्गापपण्घपपण्ङपपण्चप  
पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डप  
पण्ढपपण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप  
पण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यपपण्लप  
पण्ळपपण्पवपपण्शपपपण्षपपण्सपपण्हपप

पपत्र्कपपत्र्खपपत्र्गापपत्र्घपपत्र्ङपपत्र्चप  
पत्र्छपपत्र्जपपत्र्झपपत्र्ञपपत्र्टपपत्र्ठपपत्र्डप  
पत्र्ढपपत्र्णपपत्र्तपपत्र्थपपत्र्दपपत्र्धपपत्र्नप  
पत्र्पपपत्र्फपपत्र्बपपत्र्भपपत्र्मपपत्र्यपपत्र्लप  
पत्र्ळपपत्र्पवपपत्र्शपपत्र्षपपत्र्सपपत्र्हपप

पपश्कपपश्खपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप  
 पश्जपपश्झपपश्जपपश्ठपपश्ठपपश्ठपपश्ठप  
 पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्मप  
 पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्लप  
 पश्ळपपश्मपवपपश्शपपश्षपपश्सपपश्हप

पपक्षपपक्षपपक्षापपक्षपपक्षपपक्षपपक्षप  
 पक्षजपपक्षझपपक्षजपपक्षठपपक्षठपपक्षठप  
 पक्षणपपक्षतपपक्षथपपक्षदपपक्षधपपक्षनपपक्षमप  
 पक्षफपपक्षबपपक्षभपपक्षमपपक्षयपपक्षलप  
 पक्षळपपक्षमपवपपक्षशपपक्षषपपक्षसपपक्षहप

पपन्कपपन्खपपन्नापपन्नापपन्नापपन्नापपन्नाप  
 पन्जपपन्झपपन्जपपन्ठपपन्ठपपन्ठपपन्ठप  
 पन्नापपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्मप  
 पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्लप  
 वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हप

पपक्रपपक्रपपक्रापपक्रापपक्रापपक्रापपक्राप  
 पक्रजपपक्रझपपक्रजपपक्रठपपक्रठपपक्रठपपक्रणप  
 पक्रतपपक्रथपपक्रदपपक्रधपपक्रनपपक्रमपपक्रफपपक्रबप  
 पक्रभपपक्रमपपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रमपवप  
 पक्रशपपक्रमपपक्रमपपक्रमप

पपक्रकपपक्रखपपक्रागपपक्रघपपक्रङपपक्रचप  
 पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रजपपक्रठपपक्रठप  
 पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदपपक्रधप  
 पक्रनपपक्रमपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप  
 पक्रमयपपक्रमलपपक्रमळपपक्रमपवपपक्रमशप  
 पक्रमषपपक्रमसपपक्रमहप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप  
 पक्कजपपक्कझपपक्कजपपक्कठपपक्कठपपक्कठप  
 पक्कापपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमप  
 पक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमपपक्कयपपक्कलप  
 पक्कळपपक्कमपवपपक्कशपपक्कषपपक्कसपपक्कहप